सामान्य अध्ययन की तैयारी

(इतिहास खंड)

-मणिकांत सिंह

इतिहास की तैयारी

- इतिहास के अध्ययन का अर्थ है राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में निरंतरता तथा परिवर्तन के तत्वों को रेखांकित करना, जिन्हें हम तथ्य (थ्बजे) के रूप में देखते हैं वे महज एक दृष्टिकोण को सिद्ध करने के उदाहरण हैं।

- परिवर्तन के तत्वों को रेखांकित करने के लिए इतिहास को निम्नलिखित उपखंडों में विभाजित कर देखना आवश्यक है-

1. **राजनीतिक** –
   - राजनीतिक विस्तार
   - प्रशासन
2. **आर्थिक** – कृषि, शिल्प, वाणिज्य व्यापार, मुद्रा अर्थव्यवस्था एवं नगरीकरण
3. **सामाजिक** – वर्ण एवं जाति, महिलाओं, शूद्रों एवं अछूतों की दशा
4. **सांस्कृतिक** –
   - धर्म एवं दर्शन
   - भाषा एवं साहित्य
   - कला

परिवर्तन के क्रम को निम्नलिखित रुप में समझने की जरूरत है

Diagram-I

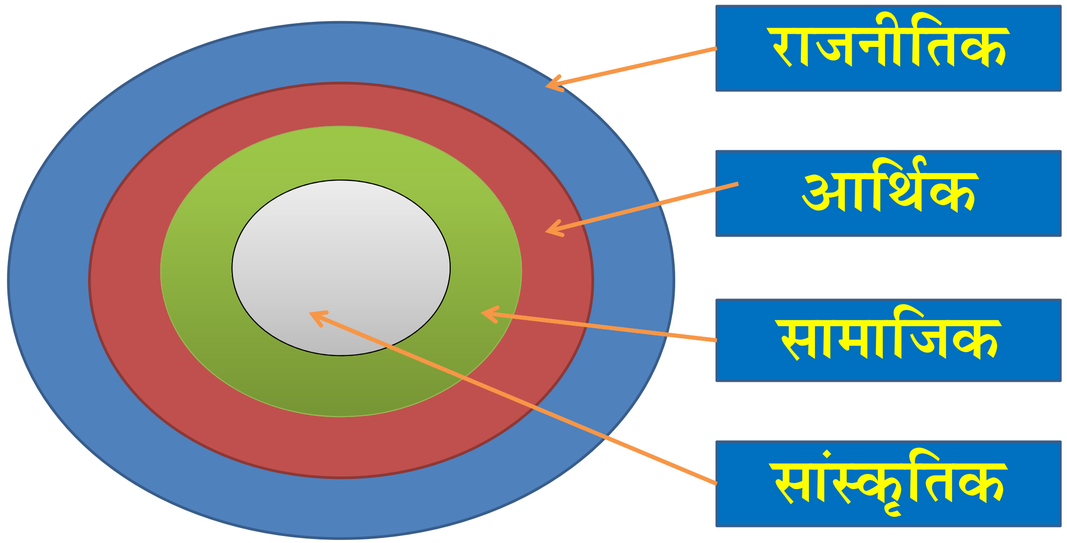

Diagram-II

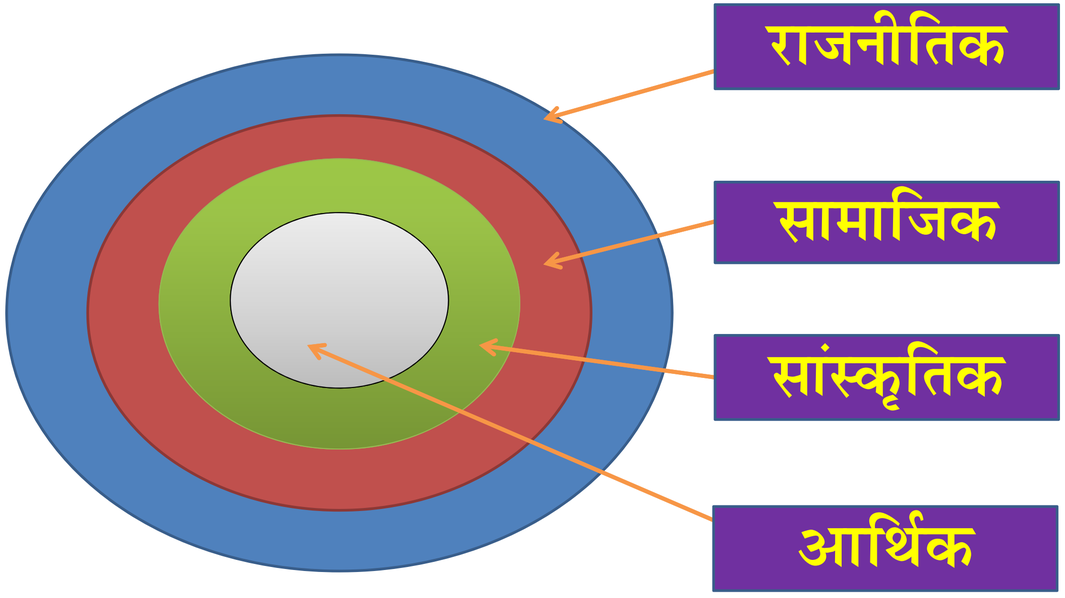

परिवर्तन के क्रम को निम्नलिखित रुप में समझने की जरूरत है

डायग्राम-1 यह दर्शाता है कि -

- परिवर्तन के क्रम में राजनीतिक परिवर्तन सबसे तीव्र होता है।
- आर्थिक परिवर्तन उससे धीमा होता है।
- सामाजिक परिवर्तन उससे भी धीमा होता है।
- सांस्कृतिक परिवर्तन सबसे धीमा होता है।

डायग्राम-2 यह संकेतित करता है कि परिवर्तन के क्रम में आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन का एक दूसरे के साथ गहरा संबंध होता है। अगर आर्थिक परिवर्तन राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन का रास्ता तैयार करता है तो बदले में राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारक भी आर्थिक कारक पर अपना प्रभाव छोड़ता है।

उदाहरण के लिए अगर मध्य गंगा घाटी में कृषि अर्थव्यवस्था के प्रसार ने बौद्ध पंथ के उद्भव का मार्ग प्रशस्त किया तो बौद्ध पंथ ने भी अर्थव्यवस्था पर अपने ढंग से प्रभाव छोड़ा।

इतिहास लेखन

- **इतिहास के अध्ययन में प्रचलित विभिन्न दृष्टिकोण**

  1. प्राच्यवादी
  2. उपयोगितावादी
  3. राष्ट्रवादी
  4. मार्क्सवादी
  5. संशोधनवादी

- **अतीत एवं वर्तमान के बीच संवाद**

  अतीत की व्याख्या के क्रम में अतीत को वर्तमान से जोड़ कर देखने का प्रयास अथवा प्राचीन काल की घटनाओं की मध्यकालीन एवं आधुनिक घटनाओं से तुलना।

आधुनिक भारत

-मणिकांत सिंह

18वीं शताब्दी का भारत

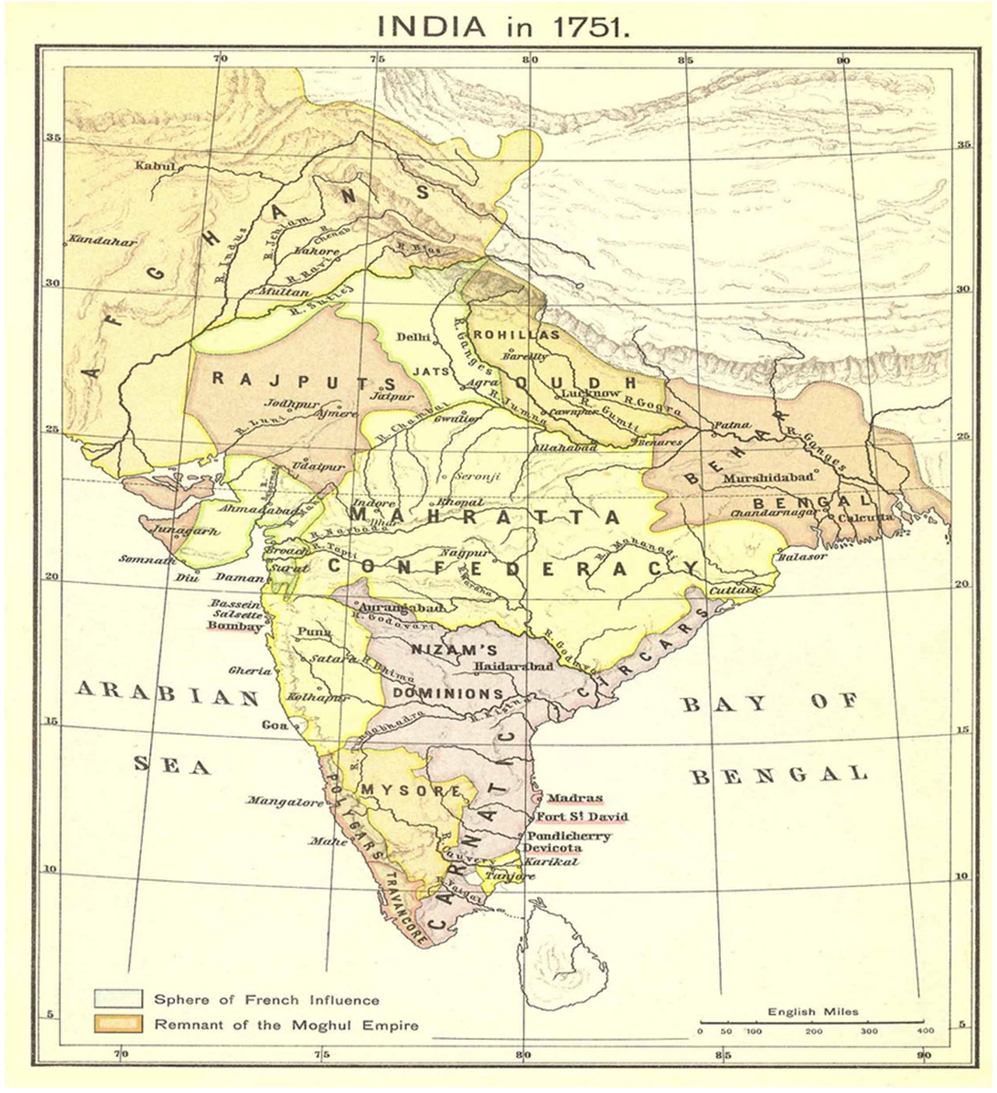

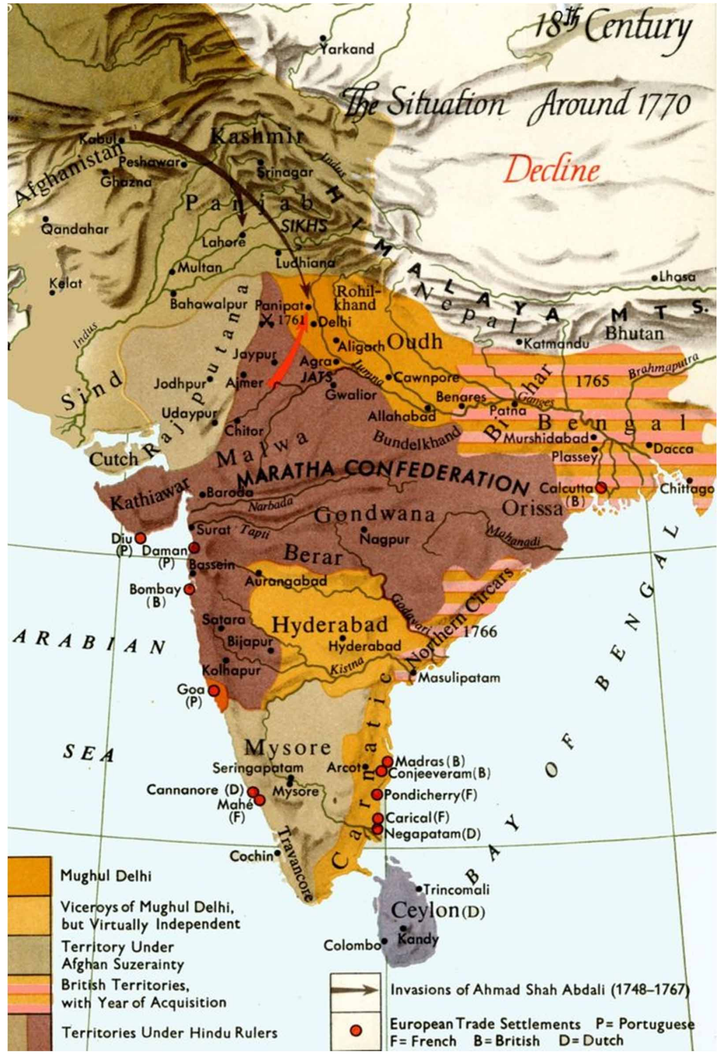

आधुनिक भारत का इतिहास : एक परिचय

आधुनिक भारत तथा समकालीन भारत के इतिहास को निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण भागों में बाँटकर देखा जा सकता है-

1. 18वीं सदी का पूर्वार्द्ध-

   a. भारत का राजनीतिक परिदृश्य-
      - मुगल साम्राज्य का विघटन तथा क्षेत्रीय राज्यों का उद्भव
      - मराठा क्यों मुगल साम्राज्य का विकल्प नहीं दे सके?

   b. आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तन-
      - क्या यह अंधकार का युग था अथवा पतन का काल था?

प्रश्नः पानीपत का तीसरा युद्ध 1761 में लड़ा गया था। क्या कारण था कि इतनी अधिक साम्राज्य प्रकंपी लड़ाइयाँ पानीपत में ही लड़ी गई थीं? (10 अंक, 150 शब्द, UPSC 2014)

आधुनिक भारत का इतिहास : एक परिचय

2. 18वीं सदी का उत्तरार्द्ध–

- ब्रिटिश शासन की स्थापना तथा विस्तार
- ब्रिटिश कंपनी कैसे एक व्यापारिक कंपनी से राजनीतिक शक्ति के रूप में तब्दील हो गई?
- किन कारणों से ब्रिटिश फ्राँसीसी शक्ति के विरुद्ध सफल रहे?
- भारतीय राज्य ब्रिटिश शक्ति के विरुद्ध क्यों सफल नहीं हो सके?
- क्या ब्रिटिश ने भारत को बेखबरी के दौर में ही जीता?
- क्या ब्रिटिश ने भारत के मुक्तिदाता की भूमिका निभाई?

प्रश्नः सुस्पष्ट कीजिये कि मध्य अठारहवीं शताब्दी का भारत विखंडित राजतंत्र की छाया से किस प्रकार ग्रसित था?

(10 अंक, 150 शब्द, UPSC 2017)

उपनिवेशवाद का प्रथम चरण
वाणिज्यिक चरण (1757-1813)

उद्देश्य- अधिकतम रूप में राजस्व का संग्रह करना ताकि उसका एक बड़ा भाग भारतीय व्यापार में निवेशित किया जा सके।

राजनीतिक नीति
घेरे की नीति अर्थात् शत्रु राज्यों को मित्र राज्यों से घेरे रखना।

प्रशासनिक नीति
कुछ परिवर्तनों के साथ मुगल प्रशासनिक ढाँचे को बनाए रखना।

आर्थिक नीति
हस्तशिल्प उद्योगों का पतन तथा धन की निकासी।

सामाजिक नीति
भारत के प्रचलित सामाजिक ढाँचे में बदलाव का प्रयास नहीं।

सांस्कृतिक नीति
प्राच्यवाद पर बल दिया जाना।

उपनिवेशवाद का द्वितीय चरण
औद्योगिक चरण (1813-1858)

उद्देश्य- भारत को विर्निमित उत्पादों के आयातक तथा कच्चे माल के निर्यातक के रूप में परिवर्तित करना।

राजनीतिक नीति	प्रशासनिक नीति	आर्थिक नीति	सामाजिक नीति	सांस्कृतिक नीति
साम्राज्यवादी प्रसार पर बल ताकि अधिक-से-अधिक भारतीय राज्यों को प्रत्यक्ष नियंत्रण में लिया जा सके।	प्रशासनिक ढाँचे में व्यापक सुधार एवं परिवर्तन को प्रोत्साहन देना।	कृषि का व्यवसायीकरण, भारतीय हस्तशिल्प उत्पादों को धक्का पहुँचाना, रेलवे, टेलीग्राफ, डाक विभाग, सड़क मार्ग आदि का निर्माण।	समाज सुधार के लिये विधि-निर्माण करना तथा अंग्रेज़ी शिक्षा के माध्यम से नए सामाजिक वर्गों को जन्म देना।	उदारवादी तथा उपयोगितावादी विचारधारा की प्रगति तथा भारत पर उसका प्रभाव।

उपनिवेशवाद का तृतीय चरण : वित्तीय चरण (1858 तथा उसके पश्चात्)

उद्देश्य–

1. भारत को ब्रिटिश पूंजी निवेश के लिये खोलना।
2. 1857 के विद्रोह जैसी घटना की पुनरावृत्ति को रोकना।
3. अन्य औद्योगिक शक्तियों की चुनौती को देखते हुए भारत पर ब्रिटिश नियंत्रण को मज़बूत करना।

राजनीतिक नीति

भारत में विस्तारवादी नीति को छोड़ा गया तथा बदले में अप्रत्यक्ष प्रसार पर बल दिया गया।

प्रशासनिक नीति

प्रशासनिक व्यवस्था में इस प्रकार से सुधार लाना जिससे 1857 के विद्रोह जैसी घटना की पुनरावृत्ति नहीं हो सके।

आर्थिक नीति

भारत में बड़ी मात्रा में वित्त का आगमन परंतु औद्योगीकरण के लिये प्रयास नहीं।

सामाजिक नीति

1857 के विद्रोह से घबराकर सामाजिक क्षेत्र में अहस्तक्षेप की नीति का अपनाया जाना।

सांस्कृतिक नीति

आरंभ में ब्रिटिश के द्वारा नस्लवादी विभाजन पर बल दिया जाना तत्पश्चात् सांप्रदायिक विभाजन पर बल।

भारतीय राष्ट्रवाद
आद्य-राष्ट्रवादी आंदोलन
1857 का महाविद्रोह
आधुनिक राष्ट्रवादी आंदोलन
19वीं सदी के जनजातीय एवं किसान आंदोलन
19वीं सदी का समाज एवं धर्म सुधार आंदोलन
20वीं सदी के आरंभ में निम्न जाति आंदोलन का विकास तथा भीमराव अंबेडकर, पेरियार नायकर एवं श्री नारायण गुरु जैसे नेताओं की भूमिका
1920 तथा 1930 के दशक में समाजवादी एवं साम्यवादी आंदोलनों की भूमिका
परंपरावादी तत्त्व
कॉन्ग्रेस का उदारवादी चरण
कॉन्ग्रेस का उग्रवादी चरण
गांधी का आगमन
परंतु राष्ट्रीय आंदोलन का आधार आभिजात्य ही बना रहा।
भारतीय राष्ट्रवाद को जनाधार मिला किंतु उसका आधार सवर्ण ही बना रहा।
राष्ट्रीय आंदोलन का सवर्ण आधार कमज़ोर हुआ तथा इसका स्वरूप अधिक समावेशी हुआ।
भारतीय राष्ट्रवाद पहले की तुलना में कहीं अधिक समावेशी हो गया क्योंकि किसानों के साथ-साथ श्रमिकों की भागीदारी बढ़ी।
क्या भारतीय राष्ट्रवाद समावेशी राष्ट्रवाद का उदाहरण है?

स्वातंत्र्योत्तर भारत

ब्रिटिश औपनिवेशिक विरासत एवं राष्ट्र निर्माण

- विभाजन, हिंसा एवं दंगे तथा भारत की राजनीति एवं विदेश नीति पर इसका प्रभाव।
- देसी रियासतों का विलय एवं राष्ट्र निर्माण।
- एक नए संविधान के माध्यम से एक औपनिवेशिक समाज का प्रजातांत्रिक समाज के रूप में रूपांतरण।
- भारतीय राष्ट्र के बहुलवादी चरित्र की समझ- राजभाषा एवं राष्ट्रभाषा नीति, भाषायी आधार पर प्रांतों का गठन, यूनिफॉर्म सिविल कोड का मामला।
- उन लोगों को, जो सामंतवाद तथा उपनिवेशवाद की चक्की में पिस रहे थे, सामाजिक न्याय प्रदान करना।
- भारतीय अर्थव्यवस्था की पुनर्रचना- कृषि सुधार, ज़मींदारी उन्मूलन, भूदान आंदोलन, हरित क्रांति, सिंचाई का विकास, नेहरूवादी आर्थिक मॉडल एवं आर्थिक नियोजन।
- स्वतंत्र विदेश नीति के माध्यम से भारत की पहचान को स्थापित करना।

विश्व इतिहास

–मणिकांत सिंह

तैयारी की विशिष्ट रणनीति

- **विश्व** इतिहास के अध्ययन का अर्थ है परिवर्तन के तत्वों को रेखांकित करना तथा इस क्रम में अतीत से वर्तमान तक के विकास को रेखांकित करना।
- परिवर्तन के प्रक्रम को समझने के लिए निम्नलिखित फार्मूला का उपयोग

अध्ययन का विशिष्ट तरीका

अध्ययन की लंबवत पद्धति

टॉपिक विशेष की गहराई से अध्ययन-

- अमेरिका की क्रांति
- फ्रांस की क्रांति
- प्रथम विश्व युद्ध आदि

अध्ययन का क्षैतिज दृष्टिकोण

- एक टॉपिक को दूसरे टॉपिक से जोड़ते हुए परिवर्तन के तत्वों को रेखांकित करना-

अमेरिकी क्रांति → फ्रांस की क्रांति → राष्ट्रवाद → प्रथम विश्व युद्ध इत्यादि

उदारवादी चरण → उग्रवादी चरण → गांधीवादी चरण

समाप्त

-मणिकांत सिंह